बात उन दिनो की है जब मैने नया नया जॉब ज्वाईन किया था. मैने एक साईबर कैफे मे पार्ट टाईम पढ़ाने और कैफे सम्भालने का काम शुरू किया था. काम बहुत ज्यादा टाईम की खपत करता था सुबह ९ से रात के ९ बजे तक मेरी ड्यूटी रहती थी. मेरी एक गर्ल फ्रेंड थी पदमा मैत्री, सांवली रंगत की पतली दुबली, सामन्य चेहरे की लड़की. हम पहले तो हर रोज मिल लेते थे पर अब काम की वजह से मिल नही रहे थे. उसने मुझे फोन करके कहा. पर मेरा मिलना मुश्किल था सो मैने उसे बता दिया. उस कैफे में मेरे इलावा और तीन लोग भी काम करते थे. एक था अशोक साहू, दिखने मे काला कलूटा था पर शरीर भरा हुआ था और ताकतवर आदमी था. वो नेपाल का मूल निवासी था पर उसका परिवार ओडिसा मे बस गया था. पहले उसका कोई रिश्तेदार इस शहर मे रहता था सो वो भी यही रहने लगा था. सब कहते थे कि वो भरोसे के लायक नही है पर मेरी उससे अच्छी जमती थी. दूसरा था बब्लू पटेल, देखने मे सीधा साधा था पर था एक नम्बर का घाघ, अय्याशी के किस्से मशहूर थे उसके, काम वाली बाई और रेजा कूली तक के साथ अय्याशी कर चुका था. तीसरा था बिभय पासवान, था तो डरपोक पर किसी की शय मिले तो शेर हो जाता था. जब मेरा तीनो से अच्छा जमने लगा तो मैने उन्हे अपनी परेशानी बताई. अशोक ने कहा कि मै अपनी गर्ल फ्रेंड को कैफे मे दोपहर के टाईम बुला लिया करू और मिल लिया करू. मैने अपनी गर्ल फ्रेंड पुछा तो वो तैयार हो गई. फिर हम डेली वहां मिलने लगे, कोने मे बैठ कर कभी कभी दो चार किस कर लेते और वो फिर चली जाती. तीनो कभी कभी उससे हलका फुलका मजाक कर लेते. मुझे मेरी गर्ल फ्रेंड कहती थी कि तीनो उसे गंदी नजरो से देखते है पर मै उसे उसका वहम कह कर टाल देता.

एक दिन अशोक ने मुझसे कहा, "आप डेली अपनी फ्रेंड से मिलते हो, पर कभी कुछ किये हो नही." मैने कहा कि कभी जगह ही नही मिली कुछ करने को. उसने सुझाव दिया कि अगर मुझे अच्छा लगे तो मै उसका रूम दोपहर मे इस्तेमाल कर सकता हूं. मैने उसका कमरा देखा था. एक छोटा सा कमरा था किचन के साथ, अटल आवास नाम से कालोनी मे जिसमे निचले तबके के लोग रहते थे. अगल बगल वालो को एक दूसरे से मतलब नही रहता था. सुझाव मुझे अच्छा लगा और मैने अपनी गर्ल फ्रेंड से बात की, उसे भी सुझाव अच्छा लगा. सो हमने अगले दिन वहां चलने का प्रोग्राम बना लिया.

अगले दिन मेरी गर्ल फ्रेंड पदमा बन ठन कर कैफे पहुंची. हमने बाईक ली और हम निर्धारित जगह के लिए चल पड़े. वहां पहुंचे और जल्दी से कमरा खोल कर अंदर दाखिल हो गये. अंदर एक बेड चार कुर्सी और एक टेबल रखा था. बेड पर एक गद्दा था, न चादर थी न तकिया न कुछ. पिछे की तरफ एक दरवाजा था जहां एक गैलरी थी. टेबल खिड़की के पास थी और कमरे मे कोई हैगर और खीला नही था. सबसे पहले मैने अपने कपड़े उतारे और टेबल पर रख दिया. फिर मैने उसके कपड़े उतारे और टेबल पर रख दिया. मैने उसे बिस्तर पर लिटाया और उसके बदन से खेलने लगा. हम दोनो दीन दुनिया से बेखबर अपने मे मस्त थे तभी पिछे से आवाज आई, "कैसा चल रहा है?" मै हड़बड़ा कर उठा और पिछे मुड़ कर देखा. वहां अशोक, बब्लू और बिभय खड़े थे. मुझे झटका लगा, मैने अपने कपड़े देखे, नदारद थे. मै समझ गया कि ये लोग धोकेबाजी कर गये हैं. अशोक ने कहा, "हम लोग

वहां बैठे बैठे सोच रहे थे कि आप लोग क्या कर रहे होंगे सो देखने चले आये." पदमा उक्डू हो कर बैठ गई थी पर हम दोनो कुछ बोल नही पा रहे थे. फिर मैने कहा, "हमारे कपड़े कहां है?" अशोक बोला, "हमारे पास है." मैने कहा, "तुम लोग हमारे कपड़े वापस करो और हमे जाने दो." उसने कहा, "बब्लू! भईया के कपड़े वापस कर दे और उनको जाने दें." फिर मुझे देख कर बोला, "आप जाओ!" मैने कहा, "दोनो के कपड़े चाहिए." उसने कहा, "पदमा जी को गरम कर दिये हो, अच्छा नही है ऐसे अधूरा छोड़ना. आप जाओ हम काम पुरा कर के पदमा जी को ले आयेंगे." मैने कहा, "नही हमे कुछ नही करना, हमे जाना है बस." उसने कहा, "सुन बे हरामजादे! एक बार कहा ना जा, हम तेरी माल के साथ थोड़ी देर मे आ जायेंगे." मैने कहा, "नही." उसने कहा, "ठीक है इसके बाप को फोन करके बुला और अपने बाप को भी फोन करके बुला तो जाने देंगे." मै और वो दोनो थरथर कांपने लगे. मैने घिघियाते हुए कहा, "क्या चाहते हो." उसने कहा, "तेरी माल के साथ कुछ देर मौज मस्ती करना चाहते है बस. तेरे को रूकना है तो रूक नही तो फूट ले." मैने पदमा के तरफ देखा, वो मुझे नही देख रही थी, पर कुछ बोल नही रही थी. अशोक ने उससे पुछ लिया, "क्यो बे पदमा, ठीक है न, कर सकते है न थोड़े देर मौज मस्ती." पदमा बोली, "मै ऐसी लड़की नही हूं, प्लीज मुझे जाने दो." अशोक चिल्लया, "अपने यार के साथ यहां गुलछर्रे उड़ाने आई है और बोलती है कि ऐसी लड़की नही हूं." मै बीच मे बोलने को हुआ तो वो बोला, "सुन बे चुप रह अभी इससे बात कर रहे है न." उसने कहा, "भाई लोग मोबाईल का कैमरा ऑन करो और बब्लू जा बे पड़ोसियो को बुला ला और पुलिस को फोन कर देना." मैने कहा, "इससे तो तुम भी फंसोगे कि इस काम के लिए कमरा दिया." उसने कहा, "मै बोल दूंगा कि कमरे कि चाभी मिल नही रही थी सो देखने आया तो देखा कि यहां ये सब चल रहा है. और मेरे पास दो गवाह भी है." उसने पदमा से पुछा, "अब बता!!" उसने धीरे से पुछा, "आप तीनो करोगे?" मुझे झटका लगा ये क्या बोल रही है ये. अशोक बोला, "हां तीनो." उसने कहा, "ठीक है पर थोड़ा आराम से किजियेगा. मै अभी कुवांरी हूं." तीनो हंसने लगे और जल्दी जल्दी कपड़े उतारने लगे.

तीनो अंदर पदमा की बोटी बोटी नोच रहे थे और मै गैलिरी मे खड़ा था, अचानक बिभय चिल्लाया, "अंदर आ जाओ, हमारा काम हो गया." मै अंदर आया तो देखा कि तीनो कपड़े पहन लिये है और उन्होने हमारे कपड़े भी हमको दे दिया. हमने जल्दी जल्दी कपड़े पहने और बाहर आ गये. पदमा बिना मुझसे कुछ कहे सीधे रोड कि तरफ चल दी और बस पकड़ कर घर चल दी.

अगले दिन पदमा अपने टाईम पर साईबर कैफे पहुंची और हम दोनो एक कोने मे बैठ गये. बाकि तीनो भी वही थे पर कुछ नही बोले. पदमा बोली, "आने का मन नही था पर पढ़ाई के नाम से आती हूं सो मजबूरी है, अचानक आना बंद नही कर सकती." मैने कुछ कहा नही और हम लोग बैठे बैठे एक घण्टा टाईम पास किया और फिर बाहर आ गये. लगभग एक हफ्ते तक ऐसा ही चलता रहा जब अचानक एक दिन हमारे बॉस आ गये. हम दोनो अंदर ही थे सो हम दोनो को पता नही चला. वो पीछे से आकर पर्दा खोले और मुझे बोले, "एक मिनट बाहर आना." मै बिना कुछ बोले बाहर आया तो उन्होने मुझसे कहा, "तुम यही बैठो मै तुम से कुछ देर बाद बात करता हूं." ये बोल कर वो अंदर चले गये और पर्दा बंद करके पदमा दे बात करने लगे. वैसे मुझे कुछ सुनाई नही दे रहा था सो मै पांच

मिनट बाद अंदर गया और पर्दे को जरा सा सरका कर देखा. अंदर पदमा कमर से नीचे बिलकुल नंगी थी और बॉस उसी टेबल पर झुका कर पीछे से ठोक रहे थे. मै वापस बाहर आ गया और उनके बाहर आने का वेट करने लगा. सबसे पहले पदमा बाहर आई और बिना कुछ बोले सीधे बाहर निकल गई. फिर बॉस आये और बोले, "कमाल का जोरदार माल है, मजा आ गया." इसके इलावा मुझे कुछ नही बोले और अपने काम मे लग गये. अब तो डेली बॉस उस टाईम पर रहने लगे जब पदमा रहती थी पर कभी कुछ बोलते नही थे. हां इस टाईम पर बाकि तीनो को लंच पर भेज देते थे.

एक दिन हम अंदर बैठे हुए थे तब मुझे आवाज लगाये, मै बाहर आ गया. वो बाहर एक आदमी से बात कर रहे थे, "सच मे जोरदार माल है आप ट्राई तो किजीए, चलिए पहला ट्राईल फ्री रहेगा, अब ठीक है." उसने सर हिलाया और बॉस मुझे बोले, "तू काऊंटर पर बैठ मै घर से आता हूं." मै चुपचाप काऊंटर पर बैठ गया. बॉस बाहर निकल गये और वो आदमी पदमा वाले कैबिन मे घुस गया. मै ५ मिनट के बाद अंदर झांका तो पाया कि वो आदमी पदमा को टेबल पर बैठा कर ठोक रहा था. मै कुछ नही बोला और वापस आ गया. ३० मिनट बाद पहले पदमा बाहर आई और सीधे बाहर निकल गई. फिर वो आदमी आया और मुझे देख कर मुसकुराया और बाहर निकल गया.मुझे लगा अब शायद पदमा यहां आना बंद कर दे पर मेरे अनुमान से उलट वो अगले दिन अपने टाईम से पहुंच गई. मै उठ कर अंदर गया और उसके बगल मे बैठ गया. वो बैठ कर नेट मे गाने, मूवी, वालपेपर आदि सर्च करती रही और एक घन्टे बाद सिस्टम बंद करके बाहर निकल गई. डेली का यही रूटीन हो गया वो डेली आती, एक दो घन्टे बैठ कर नेट सर्फिंग करती और चली जाती.

एक दिन वो आई तो कैफे मे कोई नही था वो अंदर जा कर बैठ गई. मैने आसपास देखा तो कोई नही था सो मै भी अंदर जा कर बैठ गया. लगभग १० मिनट के बाद बॉस अचानक अंदर आये और पदमा के बगल मे बैठ गये. उन्होने उसके जांघो पर हाथ रखा और उससे बोले, "सब ठीक ठाक है न, कोई परेशानी तो नही है न." पदमा ने मुस्कुरा कर न मे सर हिला दिया. बॉस मुझे देख कर बोले, "तुम बाहर जाओ और काऊंटर पर बैठो, किसी को अंदर मत आने देना." मै उठ कर बाहर जाने लगा तो बोले, "मेरे दो फ्रेंड बैठे हैं बाहर, उन्को अंदर भेज देना." मै सर हिला कर निकल गया और बाहर उनके दोनो फ्रेंड से बोला, "आपको अंदर बुला रहे है." एक ने मुझसे पुछा, "माल बहुत बढ़िया है क्या या काम चलाऊ." मै कुछ नही बोला और वो लोग अंदर चले गये. अपनी उत्सुक्ता के कारण मैने दस मिनट बाद अंदर झांका तो पाया कि पदमा को बिना कपड़ो के एक आदमी दिवार से टिका कर ठोक रहा है और बाकि दोनो अपनी बारी का इन्तिजार कर रहे है. मै वापस बाहर आ कर बैठ गया. १ घन्टे बाद पदमा बाहर आई और सीधे बाहर निकल गई. दो मिनट बाद तीनो आपस मे बात करते हुए बाहर निकल गये.

पदमा डेली आती रही और अगले दो शनिवार को बॉस अपने दो फ्रेंड के साथ पदमा को कैबिन मे ठोकते. एक दिन शाम को बॉस मुझे बुला कर बोले कि कल कैफे बंद रहेगा. मैने सर हिला दिया और घर चला गया. अगले दिन कुछ खास काम नही था मुझे सो दोपहर मे घुमने निकल गया. जैसे ही

कैफे के पास से गुजरा तो देखा कि कैफे खुला हुआ है. उत्सुक्तावश मै कैफे मे घुसा दो देखा कि कैबिन वाले कमरे के बीचो बीच बब्लू और बिभय पदमा को आगे और पीछे से एक साथ ठोक रहे है और अशोक किनारे मे बैठ कर बीयर पी रहा है. मै चुपचाप बाहर निकल गया और दूर मे जाकर बैठ गया. १ घन्टे बाद चारो बाहर आये और कैफे बंद करके अपने अपने रास्ते चल दिये.

मेरी दुसरी जगह नौकरी लग गई तो मैने बॉस से कह कर वहां नौकरी छोड़ दी. ६ महीने बाद अचानक एक दिन मैने पदमा को दो लड़को के साथ देखा और एक कालोनी के तरफ जा रहे थे. मैन पीछा किया और वो एक मकान मे घुस गये. दस मिनट बाद मै भी चुपके से अंदर घुस गया और खिड़की से अंदर झांका. अंदर कुल ५ लड़के थे बिल्कुल नंगे. एक पदमा को बिस्तर पर लिटा कर ठोक रहा है और बाकि आस पास बैठे है. शाम को ऐसे ही घुमते फिरते बब्लु से टकरा गया. वो मुझे लेकर एक बार मे बैठ गया और थोड़ा सा पीने के बाद लगा पदमा के बखान करने. उसने मुझे बताया कि मेरे काम छोड़ने के बाद भी ६ महीने तक पदमा साईबर कैफे आती रही. बॉस हर दो दिन के बाद अपने दोस्तो के साथ उसको बजाता था और हर हफते इन तीनो को भी उसको ठोकने का मौका देता था. बॉस के दोस्तो की संख्या कभी कभी दो से तीन और पांच भी हो जाती थी. एक बार दो बॉस उसको लेकर अपने घर चले गये थे और वहां अपने दस दोस्तो के साथ उसकी जम कर कुटाई किये.

मैने ऐसे ही पुछा कि अब कहां है वो. उसने बता कि वो अचानक कैफे आना बंद कर दी, बॉस ने भी कोई पूछ परख नही की पर अशोक ने पता किया तो पता चला कि अब वो बहुत लोगो के साथ ऐश कर रही है और इन सब के लिए पैसे भी लेती है. पूरी प्रोफेशनल रंडी बन गई है.